

Sonam Bala
Assistant Professor (Guest Faculty)
Dept. of Geography
A.N.D. College, Sharpuat Patory, Samastipur
For B.A. - II (Hons)
Paper - III, Geography of India & Bihar
Lecture - 17

27th Jan 2022
Thursday

दक्षिण - पश्चिमी मानसून की ऋतु (वर्षा ऋतु)

मई के महीने में उत्तर - पश्चिमी मैदानों में तापमान के तेजी से बढ़ने के कारण निम्न वायुदाब की दशाएँ और अधिक धर कर जाती हैं। जून के आरंभ में ये दशाएँ इतनी शक्तिशाली हो जाती हैं कि वे हिंद महासागर से आने वाले दक्षिणी गोलार्ध की व्यापारिक पवनों को आकर्षित कर लेती हैं। ये दक्षिण - पूर्वी व्यापारिक पवनें समुद्र रेखा को पार करके बंगाल की खाड़ी और अरब सागर में प्रवेश कर जाती हैं, जहाँ ये भारत के ऊपर विद्यमान वायु परिसंचरण में मिल जाती हैं। समुद्र रेखा के ऊपर ये गुजरने के कारण ये पवनें अपने साथ पर्याप्त मात्रा में आर्द्रता लाती हैं। समुद्र रेखा को पार करके इनकी दिशा दक्षिण - पश्चिमी हो जाती है। इसी कारण इन्हें ६०-५० मानसून कहा जाता है।

६०-५० मानसून की ऋतु में वर्षा अन्यायक आरंभ हो जाती है, पहली बारिश का असर यह होता है कि तापमान में काफी गिरावट आ जाती है। प्रचंड गर्जन और बिजली की कड़क के साथ इन आर्द्रता भरी पवनों का अन्यायक चलना प्रायः मानसून का 'प्रस्फोट' कहलाता है। जून के पहले सप्ताह में केरल, कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र के तटीय भागों में मानसून फट पड़ता है। जबकि देश के आंतरिक भागों में यह जुलाई के पहले सप्ताह तक ही पाता है। मध्य जून से मध्य जुलाई के बीच दिन के तापमान में $5^{\circ}-8^{\circ}\text{C}$ की गिरावट आ जाती है।

ज्यों ही, ये पवनें स्थल पर पहुंचती हैं। उच्चवय और 30-40 भारत पर स्थित तापीय निम्न वायुदाब इनकी द०-प० दिशा को संशोधित कर देती हैं। सुखंड पर मानसून की शाखाओं में पहुंचती हैं —

- (i) अरब सागर की शाखा
- (ii) बंगाल की खाड़ी की शाखा

अरब सागर की मानसून पवनें

अरब सागर से उत्पन्न होने वाली मानसून पवनें आगे जाकर तीन शाखाओं में बंट जाती हैं —

(i) इसकी एक शाखा को प० घाट रोकते हैं। ये पवनें प० घाट की ढलानों पर 300 से 1200 m की ऊंचाई तक चढ़ती हैं। अतः ये पवनें ताकाल ठंडी होकर सह्याद्रि की पवनाभिमुखी ढाल तथा प० तटीय मैदान पर 250-400 cm के बीच भारी वर्षा करती हैं। प० घाट को पार करने के बाद ये पवनें नीचे उतरती हैं और गरम होने लगती हैं। इससे इन पवनों की आर्द्रता में कमी आ जाती है। परिणामस्वरूप प० घाट के पूर्व में इन पवनों से नाममात्र की वर्षा होती है। कम वर्षा का यह क्षेत्र पृष्टि-क्षया का क्षेत्र कहलाता है। कोर्जीखोड, मंगलौर, पुणे और बंगलौर में होनेवाली वर्षा की मात्रा अलग-अलग है।

(ii) अरब सागर से उठने वाली मानसून की दूसरी शाखा सुंबई के उत्तर में नर्मदा और तापी नदियों की धारियों से होकर मध्य भारत में दूर तक वर्षा करती है। दौलनागपुर पठार में इस शाखा से 15 cm वर्षा होती है। यहाँ यह जंगल के मैदान में प्रवेश कर जाती है और बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसून की शाखा से मिल जाती है।

iii) इस मानसून की तीसरी शाखा सौराष्ट्र प्रायद्वीप⁽³⁾ और कच्छ से टकराती है। वहाँ से यह अरावली के साथ-साथ प० राजस्थान को लौंघती है और बहुत ही कम वर्षा करती है। पंजाब और हरियाणा में भी यह बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसून की शाखा से मिल जाती है। ये दोनों शाखाएँ एक-दूसरे के सहारे प्रबलित होकर प० हिमालय विशेष रूप से धर्मशाला में वर्षा करती है।

बंगाल की खाड़ी की मानसून पवनें

बंगाल की खाड़ी की मानसून पवनें की शाखा म्यांमार के तट तथा द० पू० बांग्लादेश के एक थोड़े से भाग से टकराती है। किंतु म्यांमार के तट पर स्थित अराकान पहाड़ियों इस शाखा के एक बड़े हिस्से को भारतीय उपमहाद्वीप की ओर विक्षेपित कर देती है। इस प्रकार मानसून प० बंगाल और बांग्लादेश में द०-प० दिशा की अपेक्षा द० व द०-पू० से प्रवेश करती है। यहाँ से यह शाखा हिमालय पर्वत तथा भारत के उ०-प० में स्थित तापीय निम्नदाब के प्रभावधर्मी दो भागों में बँट जाती है। इसकी एक शाखा गंगा के मैदान के साथ-साथ प० की ओर बढ़ती है और पंजाब के मैदान तक पहुँचती है। इसकी दूसरी शाखा उ० व उ०-पू० में ब्रह्मपुत्र घाटी में बढ़ती है। यह शाखा वहाँ विस्तृत क्षेत्रों में वर्षा करती है। इसकी एक उपशाखा मैथिलय में स्थित गारो और खासी की पहाड़ियों से टकराती है। खासी पहाड़ियों के शिखर पर स्थित मौसिनराम विश्व की सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करता है।

तमिलनाडु तट वर्षा त्रस्तु में शुल्क ही रह जाता है, इसके दो कारण हैं—

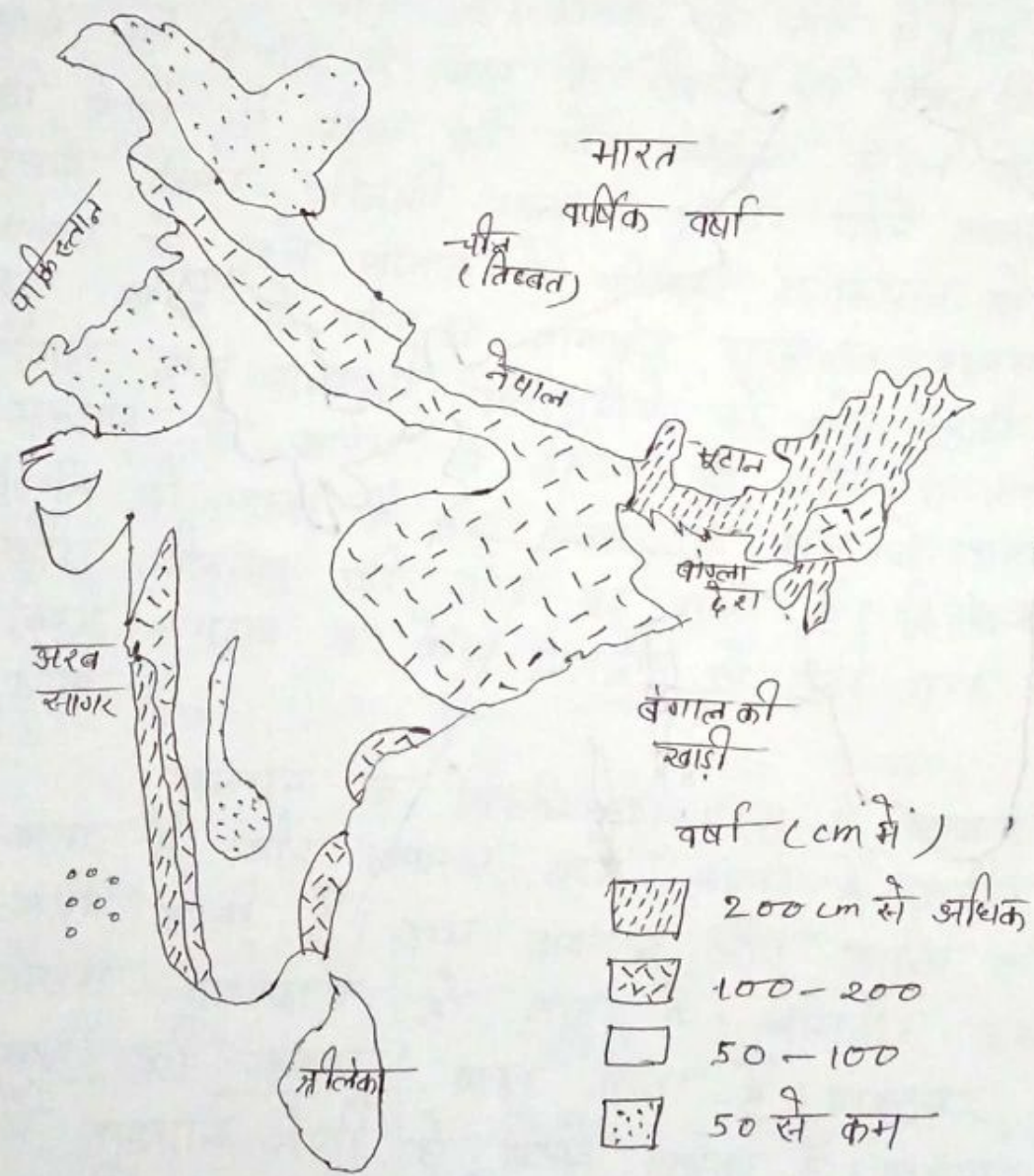
(i) तमिलनाडु तट बंगाल की खाड़ी की मानसून पवनें के समानांतर पड़ता है।

(11) यह दक्षिण - पश्चिमी मानसून की अरब सागर शाखा के वृष्टि-क्षेत्र में स्थित है।

मानसून वर्षा की विशेषताएँ

- ① ६०-७० मानसून से प्राप्त होने वाली वर्षा मौसमी है, जो जून - सितंबर के दौरान होती है।
- ② मानसून वर्षा मुख्य रूप से उच्चावच अथवा भूआकृति द्वारा नियंत्रित होती है। उदाहरण के तौर पर ७० घाट की पवनामिसूखी ढाल २५० cm से अधिक वर्षा दर्ज करती है। इसी प्रकार ३०-४० राज्यों में होने वाली भारी वर्षा के लिए वहाँ की पहाड़ियाँ और पूर्वी हिमालय जिम्मेदार हैं।
- ③ समुद्र से बढ़ती दूरी के साथ मानसून वर्षा में घटने की प्रवृत्ति पायी जाती है। ६०-७० मानसून अवधि में कोलकाता में ११३ cm, पटना में १०५ cm, इलाहाबाद में ७६ cm तथा दिल्ली में ५६ cm वर्षा होती है।
- ④ किसी एक समय में मानसून वर्षा कुछ दिनों के आँफे दौरो में आती है। इन गीने दौरो में कुछ सूखे अंतराल भी आते हैं, जिन्हें विभंग या विच्छेद कहा जाता है। वर्षा के इन विच्छेदों का संबंध उन चक्रवातीय अवदावों से है, जो बंगाल की खाड़ी के शीर्ष पर बनते हैं और मुख्य रूप से प्रवेश कर जाते हैं। इन अवदावों की बारंबारता और गहवता के अतिरिक्त इनके द्वारा अपनाए गए मार्ग भी वर्षा के स्थानिक वितरण को निर्धारित करते हैं।
- ⑤ ग्रीष्मकालीन वर्षा सूखलाधार होती है, जिससे बहुत-सा पानी बह जाता है और मिट्टी का अपरदन होता है।
- ⑥ भारत की कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था में मानसून का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि देश में होने वाली कुल वर्षा का तीन-चौथाई भाग ६०-७० मानसून की तटबु में प्राप्त होता है।

- मानसून वर्षा का स्थानिक वितरण भी असमान है, जो 12cm से 250cm से अधिक वर्षा के रूप में पाया जाता है।
- ⑧ कई बार पूरे देश में या इसके एक भाग में वर्षा का आरंभ काफी देर से होता है।
 - ⑨ कई बार वर्षा सामान्य समय से पहले समाप्त हो जाती है। इससे खड़ी फसलों को तो नुकसान पहुँचता ही है, शीतकालीन फसलों को बीने में भी कठिनाई आती है।



भारत : वार्षिक वर्षा